श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

अर्जुन द्वारा दुर्गा देवी की स्तुति

अर्जुन उवाच

नमस्ते सिद्धसेनानि, आर्ये मन्दरवासिनि ।
कुमारि कालि कापालि, कपिले कृष्णपिंगले ॥1॥

भद्रकालि नमस्तुभ्यं(म्), महाकालि नमोऽस्तु ते।
चण्डि चण्डे नमस्तुभ्यं(न्), तारिणी वरवर्णिनि ॥2॥

कात्यायनि महाभागे, करालि विजये जये ।
शिखिपिच्छध्वजधरे, नानाभरणभूषिते ॥3॥

अट्टशूलप्रहरणे, खड्गखेटकधारिणि ।
गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठे, नन्दगोपकुलोद्भवे ॥4॥

महिषासृक्प्रिये नित्यं(ङ्), कौशिकी पीतवासिनि ।
अट्टहासे कोकमुखे, नमस्तेऽस्तु रणप्रिये ॥5॥

उमे शाकम्भरि श्वेते, कृष्णे कैटभनाशिनि ।
हिरण्याक्षि विरूपाक्षि, सुधूम्राक्षि नमोऽस्तु ते ॥6॥

वेदश्रुति महापुण्ये, ब्रह्मण्ये जातवेदसि ।
जम्बूकटकचैत्येषु, नित्यं(म्) सन्निहितालये ॥7॥

त्वं(म्) ब्रह्मविद्या विद्यानां(म्), महानिद्रा च देहिनाम् ।
स्कन्दमातर्भगवति, दुर्गे कान्तारवासिनि॥8॥

स्वाहाकारः(स्) स्वधा चैव, कला काष्ठा सरस्वती ।
सावित्रि वेदमाता च, तथा वेदान्त उच्यते ॥9॥

स्तुतासि त्वं(म्) महादेवि, विशुद्धेनान्तरात्मा ।
जयो भवतु मे नित्यं(न्), त्वत्प्रसादाद् रणाजिरे ॥10॥

कान्तारभयदुर्गेषु, भक्तानां(ञ) चालयेषु च ।
नित्यं(वँ) वससि पाताले, युद्धे जयसि दानवान् ॥11॥

त्वं(ञ) जम्भनी मोहिनी च, माया ह्रीः(श्) श्रीस्तथैव च ।
सन्ध्या प्रभावती चैव, सावित्री जननी तथा ॥12॥

तुष्टिः(फ्) पुष्टिर्धृतिदीर्प्तिश्- चन्द्रादित्यविवर्धिनी ।
भूतिर्भूतिमतां(म्) संख्ये, वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः ॥13॥

अर्जुन बोले- मन्दराचल पर निवास करने वाली सिद्धों की सेनानेत्री आयें। तुम्हें बारम्बार नमस्कार है। तुम्हीं कुमारी, काली, कापाली, कपिला, कृष्णपिंग्ला, भद्रकाली और महाकाली आदि नामों से प्रसिद्ध हो, तुम्हें बारम्बार प्रणाम है। दुष्टों पर प्रचण्ड कोप करने के कारण तुम चण्डी कहलाती हो, भक्तों को संकट से तारने के कारण तारिणी हो, तुम्हारे शरीर का दिव्य वर्ण बहुत ही सुन्दर है। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। महाभागे। तुम्हीं (सौम्य और सुन्दर रूपवाली) पूजनीया कात्यायनी हो और तुम्हीं विकराल रूपधारिणी काली हो। तुम्हीं विजया और जया के नाम से विख्यात हो। मोरपंख की तुम्हारी ध्वजा है। नाना प्रकार के आभूषण तुम्हारे अंगों की शोभा बढ़ाते हैं। तुम भयंकर त्रिशूल, खडंग और खेटक आदि आयुधों को धारण करती हो।

नन्दगोप के वंश में तुमने अवतार लिया था, इसलिये गोपेश्वर श्रीकृष्ण की तुम छोटी बहिन हो, परंतु गुण और प्रभाव में सर्वश्रेष्ठ हो। महिषासुर का रक्त बहाकर तुम्हें बड़ी प्रसन्नता हुई थीं। तुम कुशिकगोत्र में अवतार लेने के कारण कौशिकी नाम से भी प्रसिद्ध हो। तुम पीताम्बर धारण करती हो। जब तुम शत्रुओं को देखकर अट्टहास करती हो, उस समय तुम्हारा मुख चक्रवाक के समान उद्दीप्त हो उठता है। युद्ध तुम्हें बहुत ही प्रिय है। मैं तुम्हें बारंबार प्रणाम करता हूँ। उमा, शाकम्भरी, श्वेता, कृष्णा, कैटभनाशिनी, हिरण्याक्षी, विरूपाक्षी और सुधूम्राक्षी आदि नाम धारण करने वाली देवि। तुम्हें अनेकों बार नमस्कार है। तुम वेदों की श्रुति हो, तुम्हारा स्वरूप अत्यन्त पवित्र है, वेद और ब्राह्मण तुम्हें प्रिय हैं। तुम्हीं जातवेदा अग्नि की शक्ति हो, जम्बू, कटक और चैत्यवृक्षों में तुम्हारा नित्य निवास है। तुम समस्त विद्याओं में ब्रह्मविद्या और देहधारियों की महानिद्रा हो। भगवति। तुम कार्तिकेय की माता हो, दुर्गम स्थानों में वास करने वाली दुर्गा हो। सावित्रि। स्वाहा, स्वाध, कला, काष्ठा, सरस्वती, वेदमाता तथा वेदान्त- ये सब तुम्हारे ही नाम हैं। महादेवी। मैंने विशुद्ध हृदय से तुम्हारा स्तवन किया है। तुम्हारी कृपा से इस रणागङ्ण में मेरी सदा ही जय हो। माँ। तुम घोर जंगल में, भयपूर्ण दुर्गम स्थानों में, भक्तों के घरों में तथा पाताल में भी नित्य निवास करती हो। युद्ध में दानवों को हराती हो। तुम्हीं जम्मनी, मोहिनी, माया, हीं, श्रीं, संध्या, प्रभावती, सावित्री और जननी हो। तुष्टि, पुष्टि, धृति तथा सूर्य-चन्द्रमा को बढ़ाने वाली दीप्ति भी तुम्हीं हो। तुम्हीं ऐश्वर्यवानों की विभूति हो। युद्ध भूमि में सिद्ध और चारण तुम्हारा दर्शन करते हैं।